11

अंगोछे से शिक्षा

(यूहन्ना 13:1-17)

अपनी पूरी सेवकाई के दौरान यीशु अपनी स्वर्गीय समय-सारिणी के विषय में अत्यंत चेतन रहा। जब उसकी मां ने उसे एक आश्चर्यकर्म करने के लिए कहा तो उस यीशु ने कहा, ''मेरा समय अभी नहीं आया'' (यूहन्ना 2:4)। उसकी सेवकाई के दौरान कई बार उसके शत्रु उसे पकड़ नहीं पाए; क्योंकि ''उसका समय अभी नहीं आया था'' (यूहन्ना 7:30; 8:20)। यीशु की निजी सेवकाई के अन्तिम दिनों तक हम देखते हैं कि बार-बार ज़ोर देकर कहा गया है कि ''वह घड़ी'' आ पहुंची है।

> इस पर यीशु ने उन से कहा, ''*वह समय आ गया है,* कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो'' (यूहन्ना 12:23)।
>
> फसह के पर्व से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि *मेरी वह घड़ी आ पहुंची है* कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, ... (यूहन्ना 13:1)।
>
> यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखें आकाश की ओर उठाकर कहा, ''हे पिता, *वह घड़ी आ पहुंची, ...*'' (यूहन्ना 17:1)।

हमारा यह पाठ यूहन्ना 13 अध्याय में से लिया गया है। यीशु अच्छी तरह जानता था कि अब क्रूस की परछाईं लम्बी से और लम्बी होती जा रही है। उसने धरती पर और पंद्रह दिन से भी कम रहना था। वह ''क्षण'' आने से पहले यीशु ने अपने प्रेरितों को अनेक बातें बतानी थीं। लोगों में प्रचार का कार्य, उसने कम कर दिया था, परन्तु उस कमरे की निकटता में अपने प्रेरितों को इकट्ठा करके यीशु उनके साथ महत्वपूर्ण सच्चाइयों के बारे में कुछ बातें करना चाहता था। मत्ती, मरकुस और लूका ने भी प्रभु भोज की तैयारी की; यीशु के पकड़वाए जाने की भविष्यवाणी; प्रभु भोज की स्थापना, जैसे इन निजी क्षणों के बारे में विस्तार से बताया है। बाद में यूहन्ना ने लिखते समय उन बातों को नहीं दोहराया; इसलिए इसमें काई संदेह नहीं कि वे घटनाएं भाइयों से प्रभु भोज में शामिल होने पर दोहराई जाती थीं। इसके विपरीत यूहन्ना ने यीशु की अपने प्रेरितों से बिछड़ने की लम्बी चर्चा की है (अध्याय 13-16), जो यीशु के द्वारा की गई हृदयस्पर्शी प्रार्थना से समाप्त होती है (अध्याय 17)।

इस भाग के आरम्भ में, प्रेरित यीशु के गम्भीर शब्दों को ग्रहण करने की स्थिति में नहीं थे। इसलिए अध्याय 13 का आरम्भ अंगोछे से सबक देते हुए यीशु के अपने चेलों के पैर धोने की कहानी के साथ होता है। चेलों के लिए आवश्यक था कि जो चुनौती यीशु उन्हें देने को था उसके

लिए तैयार हों। आज मुझे और आपको यीशु की चुनौती के लिए तैयार होते हुए इन शिक्षाओं की आवश्यकता है।

अधीनता की शिक्षा (यूहन्ना 13:1-5)

यीशु ने अंगोछा उठाया

यूहन्ना 13–17 का मुख्य विषय प्रेम है। इन अध्यायों में प्रेम शब्द इकत्तीस बार आया है। यूहन्ना 13:1 में इन सभी अध्यायों की और यीशु द्वारा प्रेरितों के पैर धोने की घटना की भूमिका है।

> फसह के पर्ब्ब से पहिले [यीशु फसह के दौरान मरा] जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से जो जगत में थे, जैसा *प्रेम* वह *रखता* था, अन्त तक वैसा ही *प्रेम रखता* रहा।

यदि आप उसी की तरह प्रेम करें जैसे यीशु सिखाता है, तब आप वह काम करेंगे जिसका मूल्य कोई नहीं चुका सकता।[1]

आयत 2 में टिप्पणी जोड़ी गई है कि ''खाने के समय, जब शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाए।'' इस विववरण में यह बात क्यों कही गई थी? थोड़ी देर बाद यीशु यहूदा सहित सभी प्रेरितों के पांव धोने वाला था। यीशु को यहूदा के पांव धोते देखकर याद रखें कि उसे पूरी तरह इस बात की जानकारी थी कि यहूदा क्या करने का निश्चय कर चुका है।

आयत 3 कहती है कि ''यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं, और परमेश्वर के पास आता हूं'' ये बातें कीं! यीशु सेवक बन गया, क्योंकि वह जानता था कि वह कौन है और कहां जा रहा है?। बरीचन-फॉक्नर की फिल्म ''मैरिज इनरिचमेंट'' में भी यह बात पर ज़ोर देकर कही गई है कि अपने ऊपर विश्वास करने वाला व्यक्ति गंदगी भी साफ कर सकता है। इसके विपरीत जिन्हें स्वयं पर भरोसा नहीं होता, उनको लगता है कि इस तरह के अच्छे काम से उनकी शान में अन्तर आएगा। यीशु अपने आप को जानता था, इसलिए वह सेवक बन गया।

''यीशु ... भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए और अंगोछा लेकर अपनी कमर बान्धी'' (आयतें 3, 4)। यीशु और उसके चेले वैसे नहीं बैठे थे, जैसे कि डाविंसी के प्रसिद्ध चित्र ''दि लास्ट सप्पर'' में दिखाया गया है अर्थात वह खाने की बहुत बड़ी मेज़ पर पीछे गद्दीदार कुर्सियों पर नहीं बैठे थे। वे तो नीचे; एक ओर पड़ी चटाई या गलीचे पर बाईं कुहनी की टेक लगा[2] दहिने हाथ से खा रहे थे।[3] वे रोटी के टुकड़े करके अपने सामने रखे हुए कटोरे में डुबो कर मुंह में डाल रहे थे। इस चित्र की कल्पना करने पर यीशु और उसके बारह प्रेरित चौंकी जैसे निचले मेज़ के इर्द-गिर्द एक-दूसरे से जुड़े ऐसे लगेंगे[4] कि हर किसी के *पैर* दूसरे के *मुंह* से अधिक दूर न हों। इसी स्थिति में यीशु चौंकी से उठा और प्रेरितों के पैर धोने के लिए तैयार हो गया।

उस ज़माने में पैर धोना सामाजिक रीतियों का एक अंग था। यदि किसी को भोजन करने के

लिए बुलाया जाता, तो वह नहाने के बाद ही खाना खाने बैठता था। परन्तु पलिश्तीन के कच्चे रास्ते बहुत ही गन्दे थे, उन में कूड़ा पड़ा रहता था (याद रखें कि जानकार भी इन रास्तों से ही निकलते थे)। वर्षा होने पर कीचड़ हो जाता था। सब लोग खड़ावें ही पहनते थे। किसी के घर पहुंचने तक अतिथि सिर से घुटनों तक तो साफ रह जाता था, परन्तु उसके पांव गंदे हो जाते थे। समझदार मेज़बान अपने घर के द्वार के पास पानी के भरे मटके के साथ एक मग, एक तसला और अंगोछा अवश्य रखता था।[5] घर में प्रवेश करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने जूते उतार देता[6] और कोई जन उसके पैर धोता। आमतौर पर यह काम कोई दास ही करता था क्योंकि इस काम को बहुत ही हीन माना जाता था। इतना हीन किसी इब्रानी दास को यह काम करने के लिए विवश नहीं किया जाता था। सामान्यतया यह काम गैर-यहूदियों (दासों या गुलामों) को करने के लिए कहा जाता था। अतिथियों के पैर धोने के लिए नौकर न होने की स्थिति में समझदार मेज़बान स्वयं ही यह कार्य कर लेता था। मेज़बान के न होने पर (जैसे उस अटारी में) अतिथि ही एक दूसरे के पांव धोते थे, गंदे पांव लेकर खाने बैठने की बात तो कोई सोच भी नहीं सकता था।

फिर इन पास-पास बैठे चेले के पांव गंदे क्यों थे? लूका हमें बताता है कि जब वह खा रहे थे तो, ''उनमें एक विवाद हुआ कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है?'' (लूका 22:24)। क्या आपको इनकी आवाज़ सुनाई नहीं दे सकती? अंद्रियास कहता है, ''मुझे सबसे पहला बुलाया गया था।'' यहूदा कहता है कि ''मेरे पास धन की थैली होती है।'' पतरस कहता है, ''मुझे राज्य की कुंजियां दी गई हैं।'' सारा कमरा घमण्डी मनों और गंदे पैरों से भरा हुआ था। वे गद्दी के लिए तो झगड़ने को तैयार थे पर **परने** के लिए नहीं। वे वहां इस प्रकार पड़े हुए थे, जैसे हर किसी का मुंह दूसरों के पैरों की गंदगी से गंदा हुआ हो।

इन शब्दों की पृष्ठभूमि है: ''यीशु ... भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और अंगोछा लेकर अपनी कमर बान्धी'' (आयतें 3, 4)। यीशु ने उठकर अपने ऊपरी वस्त्र उतारे, जैसे हम अपने ऊपरी वस्त्र उतार कर काम करने के लिए कमीज के बाजू टांग लेते हैं।[7] फिर यीशु ने एक अंगोछा लिया और अपनी कमर पर बांधा। एक लम्बा परना, जो कमर पर बांधकर पैर धोने के पश्चात पोंछने के काम आता था।[8]

''फिर तसले में पानी डाल कर प्रेरितों के पांव धोने और उस अंगोछे से, जो कमर पर बंधा हुआ था, पोंछने लगा'' (आयत 5)। झुककर यीशु के अपने प्रेरितों के पांव धोने की कल्पना करें।[9] कौन बड़ा है, पर उनका विवाद बंद हो जाता है; कानाफूसी रुक जाती है, सब चुपी साध लेते हैं। केवल यीशु द्वारा उनके पैर धोने केलिए पानी डालने, पैरों पर पानी पड़ने, परने से पांव पोंछने, गंदे पानी को बाहर फैंकने और साफ पानी तसले में डालने और यीशु के तेज सांस लेने की आवाज़ ही सुनाई देती है। थोड़ी देर तक प्रेरितों के आश्चर्यचकित होकर एक-दूसरे की ओर देखने और बाद में शर्म से अपना सिर झुका लेने की कल्पना हम कर सकते हैं।

यीशु अपने प्रेरितों से किसी ऐसी बात की आशा नहीं करता, जो उसने स्वयं न की हो, या वह न करना चाहता हो। हर प्रेरित के एक-एक करके पांव धोकर यीशु अपने प्रेरितों को सेवक बनना सिखा रहा था। वह कह रहा था, ''यदि तुम मेरे चेले बनना चाहते हो तो दीन बनो!''

यीशु ने अपने चेलों से ऐसा कुछ करने को नहीं कहा, जो वह स्वयं करने को तैयार न हो। स्वर्ग से आकर यीशु ने ''अपने आप को शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और

मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, ...'' (फिलिप्पियों 2:7, 8)। अपने जीवन के उदेश्य के बारे में बताते हुए यीशु ने कहा, ''मनुष्य का पुत्र, इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे'' (मत्ती 20:28)। जब चेले झगड़ रहे थे कि उनमें से बड़ा कौन है, तो उसने कहा कि ''मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाईं हूं'' (लूका 22:27)।

हमें भी ''अंगोछा उठाने'' की आवश्यकता है

आज हम मुंह से दीनता की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। हम जानते हैं कि पवित्र शास्त्र हमें दीन होना सिखाता है। सच तो यह है कि दीनता ऐसा गुण नहीं है, जिसकी सराहना हम से अधिक लोग करते हों। ''दीन'' और ''दीनता'' शब्द एक ही मूल शब्द से बने हैं। आपने किसी को यह कहते हुए सुना होगा, ''मैं जीवन में कभी इतना अपमानित नहीं हुआ।'' कोई अपमानित लज्जित या परेशान होना नहीं चाहता, परन्तु यह समझ लें कि पैर धोना दीन होना था। दूसरों की सेवा करना दीन और अपमानित होना हो सकता है।

हम में से अधिकतर लोगों को सेवक कहलाने में कोई आपत्ति नहीं होती। ''परमेश्वर का बहुत बड़ा सेवक'' कहलाने पर हमें बड़ी खुशी होती है, पर यदि कोई हमारे साथ सेवक जैसा व्यवहार करे तो हमें अच्छा नहीं लगता। नये नियम के समय में सेवकों से अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था। सेवकों की प्रशंसा नहीं की जाती थी। सेवक द्वारा काम खत्म करने पर आपको क्या लगता है कि स्वामी कितनी बार उसे शाबाश देता होगा? ''सेवक जी आपका धन्यवाद, आपने बहुत ही अच्छा काम किया है, शुक्रिया!'' उत्तर आप जानते हैं कि किसी भी मालिक ने यह बात नहीं कही होगी।

क्या हम सेवक बनने को तैयार हैं? क्या आप दूसरों के लिए दीन होने को तैयार हैं? क्या हम कोई नीच काम करने को तैयार हैं, जो हमें पसन्द न हो? यदि कोई हमारी सहायता को तैयार नहीं हो, क्या तब भी हम सेवा करने के लिए उपस्थित होंगे? क्या हम सेवा को तैयार हैं, लोगों से शाबाशी सुनने के लिए नहीं, क्योंकि यह करना ठीक है?

ऐसी सेवा करना कठिन है। किसी ने कहा है कि मसीही पाठ्यक्रम में दीनता का पाठ सबसे कठिन है। फिर भी यीशु हमें दीनता सिखाना चाहता है। यीशु ने फरीसियों के घमण्ड की निन्दा करते हुए कहा, ''जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा'' (मत्ती 23:11, 12)।[10] संसार के लोग बड़ाई चाहते हैं पर यीशु के पीछे चलने वाले सेवा का अवसर ढूंढ़ते हैं।

पवित्रता का सबक (यूहन्ना 13:6-11)

हमें आत्मिक शुद्धता की आवश्यकता है

एक-एक करके सबके पांव धोते हुए यीशु प्रेरितों के 13डी नम्बर वाले पैरों तक आया।[11] ''जब वह शमौन पतरस के पास आया: तब उसने उस से कहा, हे प्रभु, क्या तू मेरे पांव धोता

है ?'' (आयत 6)। पतरस को समझ नहीं आई कि प्रभु यीशु दीनता भरा दासों वाला काम क्यों कर रहा है।

''यीशु ने उसे उत्तर दिया, कि जो मैं करता हूं, तू अब नहीं जानता, परन्तु इसके बाद समझेगा'' (आयत 7)। यीशु उसे समझा रहा था कि ''मेरी मृत्यु, जी उठने, ऊपर उठाए जाने और पवित्र आत्मा के आने के बाद तू समझ जाएगा।''

परन्तु पतरस को इस समय नहीं समझ आया। उसने उससे कहा, ''तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा'' (आयत 8)। मूल भाषा में यह दोहरा नकारात्मक वाक्य है। हिन्दी भाषा में दोनों नकारात्मक वाक्य एक-दूसरे को *काटते* हैं, परन्तु यूनानी भाषा में उनके साथ नकारात्मक का अर्थ गहरा हो जाता है; पतरस ने मूल में यह कहा, ''नहीं, नहीं आप मेरे पांव *कभी न* धोना!''

''यीशु ने उसे उत्तर दिया, यदि मैं तुझे न धोऊं, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं'' (आयत 8)। यदि पतरस यीशु को अपने पांव न धोने देता तो दोनों में कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता था।

पतरस कभी कोई निर्णय अधूरा नहीं छोड़ता था। उसने तुरन्त उत्तर दिया, ''हे प्रभु, तो मेरे पांव की नहीं, वरन हाथ और सिर भी धो दे'' (आयत 9)। अन्य शब्दों में, उसका कहना था कि ''ठीक है, प्रभु यदि यही बात है तो अपने साथ मिलाए रखने के लिए मुझे सिर से पांव तक नहला दे।''

यीशु ने उससे कहा, ''जो नहा चुका है,[12] उसे पांव के सिवा और कुछ धोने का प्रयोजन नहीं; परन्तु वह बिल्कुल शुद्ध है'' (आयत 10)। जैसा कि पहले भी कहा गया है कि अतिथि खाना खाने से पहले नहा लिया करते थे। इसलिए उन्हें पूरी तरह शुद्ध होने के लिए मात्र पांव धोने की आवश्यकता होती थी। पतरस की देह के जिस भाग को धोने की आवश्यकता थी, वह उसके पांव थे।

फिर यीशु ने रहस्यमयी बात बताई, ''और तुम शुद्ध हो; परन्तु सब के सब नहीं'' (आयत 10)। मूल संदर्भ में यीशु ''तुम'' शब्द एक वचन के लिए इस्तेमाल कर रहा था (आयत 8), परन्तु आयत 10 में उसने बहुवचन शब्द के रूप में इस्तेमाल किया (अंग्रेज़ी में "you" का बहुवचन रूप नहीं है,[13] परन्तु हिन्दी व यूनानी में है-अनुवादक)। इस प्रकार अकेले पतरस से बात करना छोड़कर यीशु अन्य प्रेरितों से बातें करने लग गया। ''और तुम शुद्ध हो'' उसने हाथ से संकेत करके कहा। फिर वह आत्मिक बातों पर बल देने के लिए मुड़ा और निराशा भरे स्वर से यह जोड़कर संकेत किया, ''परन्तु सब के सब नहीं।''

हमें यीशु की बात के अर्थ की कल्पना करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अगली आयत व्याख्या करती है: ''वह तो अपने पकड़वाने वाले को जानता था इसीलिए उसने कहा, तुम सब के सब शुद्ध नहीं'' (आयत 11)। ''तुम सब शुद्ध नहीं हो'' यहूदा की ओर संकेत था। शायद यहूदा का मनपरिवर्तन करने की अन्तिम कोशिश थी।

परन्तु मैं जिस सच्चाई पर ज़ोर देना चाहता हूं, वह यह है कि प्रेरितों के पांव धोने की प्रभु की दिलचस्पी उनकी शारीरिक शुद्धता में उतनी नहीं थी, जितनी *आत्मिक* शुद्धता की। इस पर ध्यान देने पर हमें आयत 8 में यीशु की बात कि ''यदि मैं तुझे न धोऊं, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं'' का गहरा अर्थ मिलता है। आत्मिक दृष्टि से यह वाक्य हमारे लिए भी है। जब तक हम यीशु के लहू से धोए नहीं जाते, तब तक हमारी कोई संगति नहीं है। प्रकाशितवाक्य 1:5 में यीशु मसीह

''जो हमसे प्रेम रखता है, और जिसने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है'' की बात की गई है।

बाहरी पापी होने के कारण हमारे लिए प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लेना आवश्यक है ताकि वह अपने लहू से हमें धो दे। हनन्याह ने शाऊल से कहा था, ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। फिर जब आत्मिक दृष्टि से, ''सिर से पांव'' धोए जाने के बाद हम प्रतिदिन इस जीवन के कठिन और गन्दे मार्गों से गुजरते हैं! मसीही होने के कारण हमें निरन्तर मसीह के हाथों से धोए जाने की आवश्यकता है।

> यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। यदि कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है।
>
> हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूं, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह (1 यूहन्ना 1:9-2:1)।

हमें अधीनता सीखने की आवश्यता है

यीशु की ओर से मनों को धोने के अनेक पक्षों का उल्लेख किया जाता है। परन्तु इस संदर्भ में प्रभु के मन में पतरस को धोने की बात करने में एक विशेष पक्ष था, *अधीनता*। पतरस शुद्ध होना चाहता था तो उसके लिए आवश्यक था कि वह प्रभु की इच्छा के अधीन हो। उसे यह अच्छा लगे या न, इससे सहमत हो या न और उसे इसकी समझ हो या न।

पतरस अपने अभियान को त्यागने का प्रयास कर रहा था; जैसे हममें से अनेक लोग करते हैं। यीशु ने कहा कि पतरस बाद में तुझे इसकी समझ आ जाएगी। इससे स्पष्ट है कि पतरस अंतत: अंगोछे से मिलने वाले सबक को समझ गया था, क्योंकि उसने लिखा है।

> हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के आधीन रहो, बरन तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिए दीनता के कमर बान्धे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का साम्हना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।
>
> इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए (1 पतरस 5:5, 6)।

आप और मैं यदि निरन्तर यीशु के रक्त में धोने जाते रहना चाहते हैं तो हमारे लिए आवश्यक है कि अधीन होकर जीवन बिताएं: ''परन्तु यदि हम प्रकाश में चलें जैसे वह प्रकाश में है (अर्थात यदि वैसा जीवन बिताएं, जो यीशु हमसे चाहता है) तो हमारी परस्पर संगति है और उसके पुत्र प्रभु यीशु का रक्त हमें सारे पापों से [निरन्तर][14] शुद्ध करता है'' (1 यूहन्ना 1:7)।

आनन्द का सबक (यूहन्ना 13:12-17)

हमें ''पैर धोना'' सीखना अनिवार्य है

अन्तिम पांव धोया जा चुका था; अंतिम पंजा सूख चुका था। यीशु उन्हें यह समझाने के लिए

तैयार था कि उसने जो कुछ किया है, उसमें प्रेरितों के लिए क्या शिक्षा थी। ''जब वह उनके पांव धो चुका, और अपने कपड़े पहिनकर बैठ गया'' (आयत 12) तो उसने उनसे बात की। यीशु ने बर्तन को एक ओर सरका दिया, फिर अपने ऊपरी वस्त्र पहन लिए।[15] सब का ध्यान यीशु की ओर ही था; चेलों का पूरा ध्यान यीशु पर था।

आसन ग्रहण कर लेने के बाद उसने पूछा, ''क्या तुम समझे कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया?'' (आयत 12)। उन्होंने उत्तर दिया होगा, ''कितना अजीब प्रश्न है, क्या हमें नहीं पता कि आपने हमारे लिए क्या किया है, हमारे पांव ही तो धोए हैं और क्या किया?'' परन्तु यीशु के कहने का अर्थ था, ''क्या तुम सचमुच समझते हो कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया है? क्या तुम्हें समझ है कि जो मैंने किया है वह क्यों किया है?''

फिर यीशु उन्हें समझाने लगता है, ''तुम मुझे गुरु,[16] और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं। यदि मैंने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पांव धोएं; तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोने चाहिए'' (आयतें 13, 14)। उन्हें उम्मीद होगी कि वह आगे कहेगा कि ''तुम भी *मेरे पांव* धोओ।'' यही ठीक रहना था। उसने 24 गन्दे पांव धोए और 120 मैली उंगलियां साफ की थीं। परन्तु उसके पैर अभी तक गन्दे थे। यही उचित होता कि वे अब प्रभु के पांव धोते। हममें से अधिकतर लोगों को यीशु के पांव धोना बुरा नहीं लगेगा, बल्कि हम तो इसके लिए कतार में खड़े रहेंगे। परन्तु यीशु ने कहा कि ''तुम्हें भी *एक-दूसरे* के पांव धोने चाहिए, क्योंकि मैंने तुम्हें नमूना दिखा दिया है कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो'' (आयतें 14, 15)।

क्या यीशु हमसे पांव धुलवाना चाहता है? शायद पैर धोना इतना कठिन न लगे। हम अपने कुछ मित्रों के पांव धो सकते हैं। जरा ठहरिए! यीशु ने कहा, ''जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।'' *यहूदा* अन्य प्रेरितों के साथ वहीं था। आपको क्या लगता है कि यीशु ने यहूदा के पांव धोए होंगे। आपको याद है कि यीशु पहले से जानता था कि यहूदा उसे पकड़वाएगा। मैं तो यह सोचता हूं कि उसके पांवों पर उबलता हुआ पानी डाल दूं या बर्फ के ढेलों से भर दूं। यहूदा के पैर सुखाते शायद मैं उसके पैरों की चमड़ी ही उतारने का प्रयास करता, परन्तु यीशु ने उतनी ही दीनता और प्रेम से यहूदा के पांव साफ किए जैसे दूसरों के।[17] यीशु मेरे लिए उदाहरण है कि मित्रों एवं शत्रुओं सभी के पैर धोने के लिए तैयार होऊं!

यीशु ने आगे कहा, ''मैं तुम से सच-सच कहता हूं, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; और न भेजा हुआ अपने भेजने वाले से'' (आयत 16)। यीशु ने हमारे लिए कोई बहाना नहीं रहने दिया। यदि वह उनके पांव धो सकता, जिनमें उसके मित्र और शत्रु दोनों शामिल थे, तो हमें भी वैसा ही करना चाहिए।

शायद हमें थोड़ी देर रुक कर स्वयं से पूछना चाहिए; यीशु के यह कहने का क्या अर्थ है कि हमें भी एक-दूसरे के पांव धोने चाहिए थे? क्या उसके कहने का अर्थ यह था कि हम पैर धोने की रीति को प्रार्थना का भाग बनाएं? कुछ धार्मिक संगठन ऐसा ही करते हैं। प्रभु भोज लेने के समय (तीन महीने के बाद, वर्ष बाद या किसी भी अन्य अवसर पर[18]) वे पैर धोने की रीति का निर्वाह करते हैं। इसमें भाग लेने के लिए जिन लोगों को चुना जाता है, वे पहले ही पांव साफ करके अच्छे पालिश किए जूते पहने हुए और नई जुराबें डालकर आते हैं। परम्परा का पालन करते हुए

पैर धोने वाले उन पैरों को धोने के लिए झुकते हैं, जो पहले से ही धुले हुए हैं, तो गन्दे पांवों को धोने का उद्देश्य तो रहा ही नहीं।

क्या यीशु यही आज्ञा दे रहा था? नये नियम के शेष भाग में पढ़कर देखें! उस प्रकार की किसी परमपरा को पहली सदी की कलीसिया की प्रार्थना में नहीं मनाया जाता था। पैर धोने का उल्लेख पत्रियों में केवल 1 तीमुथियुस 5:9, 10 में देखा जा सकता है। यहां पौलुस कलीसिया को सहायता दिए जाने के लिए विधवाओं की योग्यता बताता है:

> उसी विधवा का नाम लिखा जाए, जो साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही पति की पत्नी रही हो। और भले काम में सुनाम रही हो, जिस ने बच्चों का पालन-पोषण किया हो; पाहुनों की सेवा की हो, *पवित्र लोगों के पांव धोए हों,* दुखियों की सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो।

इसमें कई योग्यताएं बताई गई हैं, यदि एक योग्यता प्रार्थना की रीति के लिए है; तो सभी प्रार्थना की रीति को पूरा करने के लिए होनी चाहिए। परन्तु नहीं, प्रभु यीशु के कहने का अर्थ यह नहीं है।

यदि यीशु किसी विशेष समारोह की बात नहीं कर रहा तो फिर उसके कहने का अर्थ है कि हमें एक-दूसरे के पांव धोने चाहिए? प्रचारक व लेखक चार्ल्स हौज ने कहा था, ''हमने पांव धोने पर बहसें जीत ली होंगी, पर अभी पैर धोना नहीं सीखा है।'' नये नियम के समय तक सेवक पैर धोता था और यह एक अपमानजनक काम माना जाता था। इस इक्कीसवीं सदी में भी उसी प्रकार ही दूसरों की सेवा के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है। कोई भी हो, कितना भी मूल्यवान हो; कितना भी नीच हो, कोई फर्क नहीं पड़ता।

रूथ हार्म्स केल्किन ने ''आई वंडर'' शीर्षक से एक काव्य रचना थी; जिसमें उसने एक प्रश्न पूछा, जो सबको पूछना चाहिए:

> प्रभु जी, आपको पता है कि मैं कैसे
> बड़े उत्साह और भावुकता से
> तेज प्रकाश में
> आपकी सेवा करती हूं
> आपको पता है कि कैसे
> मैं स्त्रियों की एक सभा में तेरा वचन
> लगन से बताती हूं
> आप जानते हैं कि मण्डली में जाने की मुझे
> कितनी खुशी होती है।
> पवित्र शास्त्र के अध्ययन में
> मेरे उत्साह को आप जानते हैं।
> पता नहीं मैं कैसे उत्तर दूंगी
> यदि आप पानी के तसले की ओर संकेत करें और मुझे कह दें
> स्वयं उस वृद्धा कुबड़ी स्त्री के पांव धो दे

प्रतिदिन माह प्रति माह
एक कमरे में जहां कोई न देखे
और किसी को पता न हो ?[19]

क्या हमने सेवा करना सीख लिया है ? क्या हमने उस हीन कार्य को करना, घिनौने कार्यों को सराहना; गन्दगी वाले कार्यों को स्वीकार करना, अनचाहे उत्तरदायित्वों को, जिनके लिए कभी लोग ''धन्यवाद'' नहीं कहते, बल्कि शायद पलटकर दु:ख ही देते हैं, निभाना सीख लिया है ? यहूदा यीशु द्वारा पांव धोए जाने के बावजूद उस ऊपर वाले कमरे को छोड़कर चला गया और उसने यीशु को पकड़वा दिया। तौ भी यीशु ने सबसे कहा, ''एक-दूसरे के पांव धोओ !''

संसार के लोग पूछते हैं, ''कितने लोग आपके लिए काम करते हैं ?'' प्रभु पूछता है, ''कितने लोगों के लिए आप काम करते हैं ?'' हम में से कई लोग अकड़े हुए बगलों में हाथ लिए खड़े हैं, जबकि चाहिए कि हम झुककर पांव धोने की सेवा करें।

''पांव धोना'' प्रसन्नता का रहस्य है

नास्तिक जानना चाहता है, ''मेरे लिए इसमें क्या है ?'' आयत 17 बताती है कि सेवा करना सीखने पर हमारे लिए क्या है। यीशु ने अपने चेलों से कहा: ''तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।'' आयत 12 में यीशु ने पूछा, ''क्या तुम समझे कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया ?'' उसने यह मान लिया था कि उनको यह पता है और कहा, ''यदि तुम्हारा ज्ञान तुम्हारा कर्म बन जाए तो तुम धन्य कहलाओगे।'' केवल ज्ञान ही काफी नहीं है, बल्कि हमारे लिए दूसरों की सेवा करना भी आवश्यक है; यदि हम परमेश्वर से आशीष चाहते हैं तो यह करना ही होगा।

इस आयत में जिस शब्द पर मैं ज़ोर देना चाहता हूं, वह ''धन्य'' शब्द है। यही शब्द पहाड़ी उपदेश में आशीष वचनों में भी इस्तेमाल हुआ है (मत्ती 5:3)। यूनानी भाषा में इस शब्द का इस्तेमाल भीतर आनन्द, प्रसन्नता और शान्ति के लिए किया जाता है, जो बाहर की परिस्थति पर निर्भर नहीं है। मुझे KJV का अनुवाद अच्छा लगता है, ''यदि तुम ये बातें जानते हो, तो *प्रसन्न* हो।'' मन में बनी रहने वाली प्रसन्नता का रहस्य सेवा करके ही पाया जा सकता है।

सबसे बुरी स्थिति उन लोगों की है, जो सेवा करवाना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि उनसे सही व्यवहार नहीं हो रहा। उन्हें उनका उचित सम्मान नहीं दिया गया; उनके पास वह नहीं है, जो होना चाहिए था। वे प्रतीक्षा करते हैं, कोई आकर उन्हें वह सब दे, इसलिए उनकी स्थिति बड़ी दयनीय है। वास्तव में प्रसन्न वही लोग हैं, जो इस बात की कतई परवाह नहीं करते कि वे प्रसन्न हैं या नहीं; बल्कि दूसरों की प्रसन्नता और भलाई की चिन्ता करते हैं। अंगोछे से मिलने वाली सबकों में से यह सर्वोत्तम है।

सारांश

अंगोछे से मिलने वाले अन्य संदेशों एवं शिक्षाओं का भी उल्लेख किया जा सकता है, परन्तु निश्चित रूप से सर्वोत्तम शिक्षा दीनता, पवित्रता और प्रसन्नता ही है।

हममें से हर किसी को सेवा करने के बारे में अपने अन्दर झांकने वाले कुछ प्रश्न पूछने

चाहिए: क्या मैं प्रभु की सेवा कर रहा हूं ? क्या मैं अपने साथी की सेवा कर रहा हूं ? क्या मैं दिन-प्रतिदिन एक सेवक के रूप में विकसित हो रहा हूं ?[20]

हमें अधीनता के बारे में भी कुछ व्यक्तिगत प्रश्न पूछने की आवश्यकता है: जब प्रभु आदेश देता है तो क्या हम शीघ्रता से मान लेते हैं या यही होता है कि पतरस की भांति हम भी कहें, ''न प्रभु, कभी नहीं !'' हमें पतरस का दूसरा उत्तर भी सीखने की आवश्यकता है, ''प्रभु जी केवल मेरे पांव ही नहीं बल्कि हाथ और सिर भी धो !''[21] हे परमेश्वर अंगोछे से शिक्षा लेने में हमारी सहायता कर।

टिप्पणियां

[1]किसी बीमार की देखभाल करना या किसी वृद्ध रोगी की देखभाल करने के निजी उदाहरण जोड़े जा सकते हैं। [2]बाद में चेलों के पांव धोने में यीशु के कामों को दिखाकर, मैं यहां ध्यान दिलाता हूं, ''मैंने तुम्हें, ऐसे दिखाने का विचार किया था, परन्तु फिर निर्णय लिया कि न दिखाऊं क्योंकि हो सकता है कि मैं झुक तो जाऊं फिर मुझ से सीधा न हुआ जा सके।'' दूसरी ओर कोई जावन और शक्तिशाली सिखाने वाला (टीचर) या प्रचारक उस टेक लगाने की स्थिति को अच्छी तरह दिखा सकता है। [3]उन्होंने दाएं हाथ से ही खाया क्योंकि उन्होंने बर्तनों को मुंह नहीं लगाया था। [4]''जिस चेले से यीशु प्रेम रखता था'' (यूहन्ना) को ''यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा'' बताया गया है (यूहन्ना 13:23)। [5]हम यह मान सकते हैं कि जिसने भी यीशु और चेलों को कमरा दिया होगा, उसने आवश्यकता की वस्तुएं वहां रख दी होंगी। भोज तैयार करने के लिए पहले जाने वाले चेलों को यीशु ने बता दिया था कि ''वह तुम्हें एक *सजी सजाई, तैयार* की हुई एक बड़ी अटारी दिखा देगा'' (मरकुस 14:15; NIV)। [6]पूर्व में और यूरोप में और संसार के कई और भागों में आज भी बहुत से लोग ऐसा ही करते हैं। [7]मैं कोट उतार कर एक ओर रखता हूं और फिर बाहें चढ़ाता हूं। [8]मेरे पास ऐसा परना या अंगोछा नहीं है, जो कमर से बान्धे जाने के बावजूद लटका हो ! ... इसलिए मैं तौलिये का सिरा दोनों ओर से खींच कर अपनी पैंट में फंसा लेता हूं, ताकि उसका सिरा भी लटकता रहे। [9]मैं घुटने टेककर पांव धोने का अभिनय करता हूं। [10]याकूब 4:6 भी देखें।

[11]अमेरिका में 13डी जूते के बड़े नम्बर को कहा जाता है। क्योंकि संसार के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नम्बरों का इस्तेमाल किया जाता है, इसलिए सुनने वालों को समझाने के लिए अपने क्षेत्र के हिसाब से नम्बर का इस्तेमाल करें। [12]KJV बाइबल में ''धोया गया'' है परन्तु यूनानी हस्तलेख में आगे इस्तेमाल हुए अनुवाद ''धोना'' से अलग शब्द है। ''नहलाया गया'' धोए जाने में शामिल बातों का संकेत देता है। [13]दक्षिणी अमेरिका में मैं मुस्कुराते हुए जोड़ता हूं, ''टैक्सस (या किसी भी जगह) के अलावा, जहां हमें ''y'all'' बहुवचन में मिलता है। अमेरिका के अन्य स्थानों में भी (''youse,'' आदि) के बहुवचन रूप मिलते हैं। हिन्दी में ''तुम'' का बहुवचन रूप ''आप'' है-अनुवादक। [14]मूल बाइबल में ''धोता है'' वर्तमान काल है जो यूनानी में *निरन्तर* क्रिया हो दर्शाता है। [15]यहां पर मैं कमर से परना उतारकर अपना कोट फिर से पहन लेता हूं। [16]KJV में ''मास्टर'' शब्द का इस्तेमाल किया गया है जो स्कूल के शिक्षक या गुरु (पढ़ाने वाले) के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पुराना शब्द है। [17]याद रखें कि इस समय तक चेलों को कुछ पता नहीं था कि यहूदा यीशु को पकड़वाने वाला होगा (तुलना करें यूहन्ना 13:28)। यदि यीशु यहूदा के साथ अलग बर्ताव करता तो इससे अवश्य ही उनका ध्यान उस पर पड़ जाना था। [18]नया नियम हर रविवार को मनाने की शिक्षा देता है। [19]मैंने यह कविता 4 मार्च 1994 में हार्डिंग यूनिवर्सिटी, सरसी, आरकैंसा में दिए ''द चैलेंज ऑफ़ एक्सीलेंस'' पर रिचर्ड रोजर्स के लैक्चर से ली गई। [20]एक प्रवचन में मैं भी पूछता हूं, ''क्या हम मण्डली की सेवा करने को तैयार हैं ?''

[21]इन शब्दों में स्वाभाविक निमंत्रण मिलता है।